विशद
वास्तु विधान

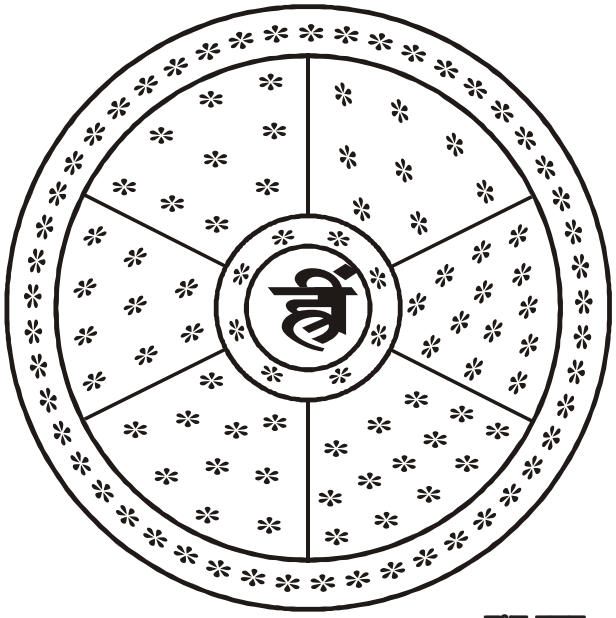

मध्य वलय – ह्रीं
प्रथम कोष्ठ – 10
द्वितिय कोष्ठ – 9
तृतिय कोष्ठ – 9
चतुर्थ कोष्ठ – 8
पंचम कोष्ठ – 13
षष्ठम कोष्ठ – 13
अन्तिम वलय – 49

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – **विशद वास्तु विधान**

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – द्वितीय-2017 ● प्रतियाँ :1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग – आर्यिका 105 श्री भक्तिभारती, क्षुल्लक 105 श्री विसोमसागरजी
क्षुल्लिका 105 श्री वात्सल्य भारती

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी
सपना दीदी, आरती दीदी

सम्पर्क सूत्र – 09829127533, 09829076085

प्राप्ति स्थल – 1. सुरेश जी सेठी,
पी-958, गली नं. 3, शांति नगर, जयपुर मो. 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र
उ/ श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान ● मो.: 09416882301
3. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली
4. जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली
मो. 9818115971

मूल्य – 51/- रु. मात्र

–: अर्थ सौजन्य : –
स्व. श्रीमती विद्या देवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जी जैन
की पुण्य स्मृति में
पुत्र धनेन्द्र कुमार, विपुल कुमार, नीरु जैन, पलक जैन,
गुड़गाँव (हरियाणा) मो. 9212388850

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

गुरु–भक्ति

जिनागम में आचार्य भगवन्तों ने दो प्रकार की शक्ति अथवा कारण कहे हैं जो किसी भी कार्य की पूर्णता में अनिवार्य होते हैं– एक उपादान कारण, दूसरा निमित्त कारण। इनमें से उपादान तो स्वाश्रित होता है, जबकि निमित्त पराश्रित। उन निमित्तों के दो भेद कहे गये– (1) सहायक निमित्त अथवा प्रेरक निमित्त, (2) उदासीन निमित्त।

उपादान व निमित्त दोनों मिलकर कार्य की सिद्धि करते हैं, गुरु प्रेरक निमित्त होते हैं जो मात्र सन्मार्ग हित का मार्ग दिखाते ही नहीं बल्कि श्रावकों को प्रभु से मिलाने की राह दिखाते अथवा साधन भी देते हैं। अपने अनमोल समय को निकालकर एक नहीं अनेकों विधानों की लड़ी लगा दी और भी साहित्य का सर्जन किया। इसी श्रृंखला में 'वास्तु विधान' का सरल सुन्दर शब्दों की माला बनाकर तैयार की क्योंकि आज सभी अपनी–अपनी समस्याओं से ग्रसित हैं। आप सभी जानते हैं सूर्य, चन्दा, ग्रह, नक्षत्र, तारे आदि अपना असर जरुर दिखाते हैं, कभी राशि पर आते हैं, तो कभी मकान, दुकान, फैक्ट्री, रसोई, बैडरुम इत्यादि तैयार कर लेते हैं। बाद में वास्तु दोष मालूम पड़ता है तब बड़े चिन्तित होते हैं। उसके निवारण के लिए गुरुदेव ने सभी समस्याओं को समझकर 'वास्तु दोष विधान' की रचना की। आप सभी इन दोषों को दूर करने हेतु गृहों, दुकान, फैक्ट्री आदि में विधि अनुसार कर पुण्य लाभ कर समस्याओं से मुक्त हो सकते हैं।

गुरु भक्ति के झरने जहाँ बहा करते हैं, उसी दिशा में गुण समूह का प्रवाह होता है। भक्ति वह सेतु है जो गुण ग्राह्यता जैसा महान् गुण जीवन में उत्पन्न करती है। मूलाचार में कुन्दकुन्द देव ने कहा है : **'आयरिय पसायेण विज्जा मंताय सिज्झन्ति'** अर्थात् गुरु भक्ति उनके प्रसाद, उनकी प्रसन्नता से दी विद्या व मंत्र की सिद्धि होती है। गुरु भक्ति ही सफलता और जीवन का आधार है। ऐसे जीवन के आधार बिन्दु गुरुदेव परम पूज्य क्षमामूर्ति प्रातः स्मरणीय आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज के चरणों में त्रय भक्तिपूर्वक नमोस्तु।

अंतिम भावना : भद्र बाहु सम गुरु हमारे हमें भद्रता दो।
रत्नत्रय संयम की शुचिता हृदय सरलता दो।।
चन्द्रगुप्त सी गुरु सेवा का पाठ हृदय भर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि तेरे दर पर हो।।

–ब्र. सपना दीदी (संघस्थ आचार्य विशदसागर)

गृह विज्ञान – वास्तु शिल्प – ज्ञानानंद

भारतीय दर्शनों में ज्योतिष मंत्र–तंत्र के साथ वास्तु शिल्प शास्त्र का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिस प्रकार ग्रह–राशि आदि का प्रभाव मानव जीवन में प्रतिफलित होता है ठीक उसी प्रकार मकान, दुकान, फैक्ट्री एवं कृषि भूमि प्लॉट आदि के आकार प्रकार दिशा–विदिशा का प्रभाव मानव जीवन पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। किसी–किसी मकान, दुकान, फैक्ट्री के माध्यम से मानव लखपति से खाकपति और किसी–किसी के माध्यम से खाकपति से लखपति हो जाता है। ऐसा कहते अनेकों महानुभावों से सुना है कि जब से इस मकान, दुकान, फैक्ट्री में आए हैं तब से आनन्द ही आनन्द है या संकटों के बादल मँडरा रहे हैं। यह सब क्या है ? क्या मकान, दुकान, फैक्ट्री किसी का अच्छा बुरा करते हैं ? शिल्प वास्तु–विज्ञान की दृष्टि से मकान, दुकान, फैक्ट्री तो किसी का अच्छा–बुरा नहीं करते परन्तु गलत दिशा में गलत तरीके से बना हुआ मकान–दुकान विनाश का कारण बन जाता है और सही तरीके से वास्तुशिल्प शास्त्र के अनुसार बने मकान–दुकान फैक्ट्री आदि विकास के कारण बन जाते हैं। अपनी एवं अपने परिवार की उन्नति चाहने वाले महानुभावों का सर्वोपरि कर्त्तव्य है कि कोई भी जमीन, जायदाद, प्लॉट, मकान, दुकान खरीदने से या निर्माण कराने से पूर्व किसी वास्तु, शिल्प शास्त्र विशेषज्ञ से सलाह कर लें।

वास्तुकला इस पृथ्वी पर किसी भी वास्तु को बनाने या स्थापित करने का वह विज्ञान है, जिसमें दिशा, आकार व स्थिति निर्धारण को ध्यान में रखते हुए सुख–समृद्धि व शान्ति प्राप्त की जा सके।

आधार– वास्तु शिल्प कला अत्यन्त प्राचीन है। इसका उद्भव केवली भगवान की निर्विवाद वाणी से हुआ है। इसका संरक्षण अनेकों ऋषि–महर्षियों ने परोपकार की भावना से किया है। वास्तु शिल्प कला वैज्ञानिक शास्त्र है। यह विज्ञान पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र, सूर्य की किरणों, वायु प्रवाह, विद्युतीय क्षेत्र, दिशाओं, गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त, ज्योतिष–शास्त्रों पर आधारित है। इसके साथ भूमि भवन या दुकान फैक्ट्री के स्वामी की जन्म–पत्रिका का भी सही समन्वय अत्यन्त आवश्यक है।

दिशायें–वास्तु शास्त्र में दस दिशाओं की विवेचना है, उन दसों दिशाओं के नाम हैं– पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, ऊर्ध्व एवं अधो। इन दिशाओं का अपना–2 महत्त्व है। इनके आधार पर ही भूखण्ड की स्थिति, मुख्य द्वार, मार्ग स्थिति, विभिन्न गृहों अर्थात् शयनगृह, रसोईगृह, स्नान गृह, स्वाध्याय, पूजन गृह एवं आँगन आदि की स्थिति निर्भर करती है।

भूमि का आकार–वर्गाकार (चौकोर) एवं आयताकार या उत्तर दक्षिण लम्बी भूमि शुभ होती है। त्रिकोण, पंचकोण, षट्कोण, अष्टकोण, बहुकोणी या गोल, असमान

आकार, विकृत आकार वाली भूमि अशुभ मानी गयी है। शुभ भूमि पर किये हुए सभी कार्य (भवन निर्माण आदि) शुभ फलप्रद होते हैं एवं अशुभ भूमि पर किये हुए निर्माण आदि कार्य अशुभ फलप्रद, नूतन झंझट, अशांति एवं उपसर्ग पैदा करने वाले होते हैं।

मकान निर्माण–शुभ चौकोर आयताकार प्लाट में यदि किसी को अपना मकान बनवाना हो तो नक्शा (मेप) बनवाते समय ध्यान रखें कि ध्यान, स्वाध्याय, पूजा कक्ष उत्तर पूर्वीय कोना अर्थात् ईशान कोण में।

रसोई कक्ष–दक्षिण व पूर्वीय कोना अर्थात् आग्नेय कोण में।

शयन कक्ष–दक्षिण भाग या पश्चिमी कोना अर्थात् नैऋत्य कोण में।

स्नान कक्ष–उत्तर या पूर्व भाग में।

शौचालय–पश्चिम या दक्षिण भाग में अर्थात् रसोई कक्ष के पश्चिम भाग में।

जीना–मकान निर्माण में जीने का भी महत्त्व है। जीना पूर्व से पश्चिम या उत्तर से दक्षिण घड़ी चाल से होना चाहिए। जीने का प्रारम्भ एवं अन्त पूर्व दिशा में नहीं होना चाहिए। सीढ़ियों की गणना विषम परन्तु 19 और 29 नहीं होनी चाहिए।

भण्डारकक्ष–खाना या भण्डार कक्ष घर के उत्तर भाग में होना चाहिए। मकान का मुख्य द्वार पूर्व या उत्तरमुखी होना चाहिए। मकान बनाते समय यह भी ध्यान रखें कि भूखण्ड विशाल है, तो दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में निर्माण कार्य प्रारम्भ करें तथा मकान दक्षिण पश्चिम का सिरा ऊँचा होना चाहिए।

आपके द्वारा खरीदे या बनाये हुए मकान, दुकान, फैक्ट्री आदि का आपके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, सुख–समृद्धि, सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यापार तथा शान्ति पर प्रभाव पड़ता है, अतः या तो वास्तुशिल्प शास्त्र का स्वयं अध्ययन करें या किसी सुयोग्य वास्तु शिल्प कला विशेषज्ञ से सलाह लेकर ही भूखण्ड खरीदें अथवा निर्माण कार्य प्रारम्भ करें। यदि सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष पुरुषार्थ की सिद्धि करना चाहते हैं तो।

कतिपय मनीषियों का कहना है कि जो भी होता है वह भाग्य के अनुसार होता है, भाग्योदय होने पर सर्वत्र आनन्द ही आनन्द परिलक्षित होता है। भाग्य विपरीतता में सभी मंत्र–तंत्र, वास्तु विज्ञान रखे रह जाते हैं। ऐसी मान्यता सर्वथा एकान्त है, भाग्योदय में भी वास्तु शास्त्र का पूरा–पूरा प्रभाव पड़ता है, वह बात अलग है कि अति पुण्यशाली इसका अनुभव न कर पाएँ। अतः यथार्थ में ही लौकिक सुख–शान्ति चाहते हो तो वास्तुशास्त्र का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

फैक्ट्री–फैक्ट्री में मीटर आग्नेय कोण एवं भारी मशीनें दक्षिण या पश्चिम में होनी चाहिए। कार्यालय पूर्व या उत्तर में श्रेष्ठ होता है।

वास्तु दोष निवारण

आपको भूखण्ड खरीदना है या भवन, फैक्ट्री आदि का निर्माण कराना है तो विधि एवं वास्तु विशेषज्ञों से परामर्श के अनन्तर ही लेना या बनवाना चाहिए। यदि आपका मकान या प्रतिष्ठान, पूर्व से ही निर्मित है और उसमें ऐसे अनेकों वास्तु दोष विद्यमान है जिनके कारण आपको अनेकों परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, तो ऐसी परिस्थितियों में मकान या प्रतिष्ठान में बिना तोड़फोड़ किए ही वास्तु दोषों का निवारण किया जा सकता है।

वास्तु दोष निवारण में वास्तु विधान, हवन, यंत्र जाप्यानुष्ठान, मंगल द्रव्य, शुभ चिह्न, यंत्र एवं मंगल कलश स्थापन का विशेष महत्त्व है।

वास्तु विधान– भूमिपूजन, शिलान्यास, गृह प्रवेश शुभारम्भ के अवसर पर वास्तु शुद्धि विधान नियम से कराना चाहिए। रक्षाबंधन या दीपावली आदि शुभ अवसरों पर प्रतिवर्ष अपने घर या प्रतिष्ठानों में एक मंगल कलश की स्थापना करानी चाहिए। जिससे सामान्य दोष स्वाभाविक रूप से परिसमाप्त हो जाएंगे।

बिना तोड़–फोड़ के उपाय– यदि आपका भवन पुराना बना है और उसमें अनेकों ऐसे वास्तु सम्बन्धित दोष हैं, जिनके कारण आपको अनेकों कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ती हैं, कभी व्यापार से मन परेशान है, तो कभी गृहयुद्ध नींद हराम कर देता है तो कभी ऐसी बीमारियाँ घर में प्रवेश कर जाती हैं जो मन, तन एवं धन सभी को विकल बना देती हैं।

कतिपय वास्तु दोषों के निवारण का उपाय यहाँ प्रतिपादित किया जा रहा है। विश्वास है यथाविधि करने पर सभी श्रद्धालुओं को लाभ अवश्य मिलेगा।

दिशा दोष– आपके भवन या प्रतिष्ठान का मुख पूर्व, उत्तर एवं ईशान दिशा को छोड़कर शेष आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम एवं वायव्य में है तो घर में किसी का विवाह होने से पूर्व या भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण महोत्सव श्रावण शुक्ला सप्तमी की शुभ बेला में वास्तुशुद्धि विधान, चौबीस घंटे का भक्तामर या णमोकार मंत्र का अखण्ड पाठ तथा संकटमोचक शान्ति विधान कराकर मुख्य दरवाजे के दोनों ओर नन्दावर्त स्वास्तिक शुद्ध घी एवं सिन्दूर से सुहागिन माता, बहनों से बनवाकर दरवाजे के ऊपर बीचोंबीच में 'ॐ' प्रतीक चिह्न या कलश बना दें जिससे दिशा–विदिशा सम्बन्धित समस्त वास्तुदोष निष्फल हो जायेंगे। सभी प्रतिकूलताएँ अनुकूलता में परिवर्तित हो जायेंगी।

स्थान दोष–भवन या प्रतिष्ठान यथास्थान पर निर्मित न हुआ हो या

मकान के अन्दर पूजनस्थल, बैडरूम, अतिथि कक्ष, अध्ययन कक्ष, रसोईघर, जीना, स्नानगृह, शौचालय आदि यथास्थान पर निर्मित न हुए हों और परिवर्तन भी सम्भव न हो तो वास्तु शुद्धि विधान कराकर चन्द्रबिन्दु युक्त अठकोण स्वस्तिक चाँदी या ताँबे का बनवाकर दीवार के अन्दर लगवा दें। सम्भव हो तो दरवाजे के समक्ष एक दर्पण लगा दें। सभी दोष परिवर्तित हो जाएंगे।

पूजन, अतिथि एवं अध्ययन कक्षों में भगवान, गुरुदेव, महापुरुष, मंदिर, शुभ चिह्न एवं हरे-भरे बाग-बगीचा, प्राकृतिक सौन्दर्य के चित्र लगाने चाहिए। चित्र खराब होने पर अग्नि या स्वच्छ पानी में समर्पित करना चाहिए। हिंसक एवं अशुभ चित्र घर में कभी भी नहीं लगाना चाहिए।

प्रवेश द्वार के समक्ष स्वागत की मुद्रा में सुहागवती महिला या पुरुष का चित्र लगाना चाहिए। जूते एवं झाड़ू घर के बाहरी भाग में छिपाकर पर्दे के अन्दर रखना चाहिए।

खड़ी झाड़ू एवं उल्टे जूते-चप्पल दरिद्रता, रोग एवं दुर्घटना के प्रतीक हैं।

रसोई के अन्दर जूते-चप्पल ले जाना अशुभ है। जूते-चप्पल पहनकर भोजन करने वालों का प्रभु भजन में मन नहीं लग सकता।

विशेष-किसी भी भूखण्ड, भवन या प्रतिष्ठान में प्रवेश करते ही मन प्रसन्न हो जाए, शुभ संकेत मिलें तो वास्तु के दोष होने पर भी आपके लिए वह स्थान शुभ है। अगर प्रवेश करते ही अशुभ संकेत मिलें, खरीदते ही मन खराब हो जाए तो ऐसे स्थान को कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए।

भूखण्ड भवन या प्रतिष्ठान में पहले दाँया पैर रखकर प्रवेश करना चाहिए।

द्वारमान-(1) जघन्य मान (2) मध्यम मान (3) ज्येष्ठ मान। चौड़ाई जितने हाथ है उसमें 60 अंगुल जोड़कर जो माप आवे वह मध्यम मान है। 50 अंगुल जोड़ने में जघन्यमान और 70 अंगुल जोड़ने में ज्येष्ठ मान की चौड़ाई वाला द्वार माना गया है।

आय ज्ञान- दीवार के अन्दर की भूमि की लम्बाई **X** चौड़ाई **÷** 8 में 1 2 3 4 5 6 7 8 अंक आने पर क्रमशः ध्वज, धूम, सिंह, श्वान, वृष, खर, गज, हवोक्ष कही जाती है।

यथाशक्ति उपरोक्त वास्तु नियमों का पालन कर एवं वास्तु विधान कर जीवन को खुशहाल बनाऐं।

संकलन-मुनि विशालसागर

(पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें-)

3

2 卐 24

5

श्लोक- **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण-चरणं च सव्वदा वंदे।।

मंगलाष्टक

-आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।1।।
नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।
तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादि चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर के माता-पिता यक्ष-यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।
सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, सप्त बुद्धि ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।6।।
आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी।।
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।
व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार।।
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पाँचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।
तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पाँचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।9।।
धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।10।।

।। इति मंगलाष्टकम् ।।

अमृत यंत्राभिषेक *(स्थापना)*

प्रासुक निर्मल नीर गंध से, श्रेष्ठ कलश भर लाए हैं।
करने यंत्राभिषेक यहाँ पर, निर्मल भाव बनाए हैं।।
तीन लोक के स्वामी जिनवर, जिनवाणी का करें प्रकाश।
बीज मंत्र युत यंत्र जीव के, करता है विघ्नों का नाश।।

अभिषेक मंत्रह्मॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं इवीं इवीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन यंत्रमभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)

विनायक यंत्र पूजा

स्थापना

पञ्च परम परमेष्ठी पावन, मंगल कहे गए हैं चार।
चार लोक में उत्तम गाए, शरण चार हैं अपरम्पार।।
विघ्न विनाशन हेतू सबका, करते हैं हम आह्वानन।
आओ तिष्ठो हृदय हमारे, कृपा करो तुम हे ! भगवन।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूताः ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

गंगा जल को प्रासुक करके, धारा तीन कराएँ।
जन्म-जरा-मृत्यु विनाशकर, मोक्ष महल को जाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को हम, जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत-जिनेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का चन्दन घिसकर, केसर साथ मिलाएँ।
भव सन्ताप नाश हो मेरा, विशद भावना भाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को हम, जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत् धोकर उसके, अनुपम पुञ्ज बनाएँ।
अक्षत पद पाएँ हम दाता, जग में न भटकाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को हम, जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रंग बिरंगे पुष्प निराले, लेकर थाल भराएँ।
काम रोग नश जाए हमारा, आत्म विशुद्धि पाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को हम, जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू बावर फेनी आदि, मीठे सरस बनाएँ।
क्षुधा वेदनी नाश हेतू शुभ, भर–भर थाल चढाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को हम, जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

घृत की ज्योति जला दीपक में, मोह महातम नाशें ।
भेद ज्ञान के द्वारा अनुपम, आतम ज्ञान प्रकाशें।।
अष्टम वसुधा पाने को हम, जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ने हमें सताया, दु:ख सहे अतिभारी।
धूप जलायें कर्मनाश को, आई हमारी बारी।।
अष्टम वसुधा पाने को हम, जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला सेव नारंगी पिस्ता, के यह थाल भराए।
मोक्ष महाफल पाने को यह, चरणों आज चढ़ाए।।
अष्टम वसुधा पाने को हम, जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए।
पद अनर्घ पाने को हम भी, आज शरण में आए।।
अष्टम वसुधा पाने को हम, जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तमशरणभूत–जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

जिनने कर्म घातिया नाशे, केवलज्ञान प्रकाश किया।
दोष अठारह से विरहित हो, निज स्वभाव में वास किया।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
अर्हन्तों के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रां अनन्तचतुष्टयादि लक्ष्मीविभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए फिर, अष्ट सुगुण प्रगटाए।
ज्ञान शरीरी हुए महाप्रभु, अष्टम वसुधा को पाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
जिन सिद्धों के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठ–भस्मीकुर्वते सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षा दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, मुक्ती पथ के हैं आधार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
जैनाचार्यों के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रूँ पञ्चाचार–परायणायाचार्य–परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, पाठी मुनिवर रहे महान्।
पच्चिस मूलगुणों के धारी, उपाध्याय हैं जगत प्रधान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, बनाकर उनके चरण चढ़ाते हैं।
उपाध्यायों के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रौं द्वादशांग-पठनपाठनोद्यताय उपाध्याय-परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की आशा के त्यागी, हैं आरम्भ परिग्रह हीन।
रत्नत्रय के धारी मुनिवर, ज्ञान ध्यान तप रहते लीन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
सर्व साधुओं के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रः त्रयोदश-प्रकारचारित्राराधकसाधु-परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज: नशे घातिया.....)

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, अर्हत् पदवी पाए।
केवलज्ञान जगाने वाले, मंगल प्रथम कहाए।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिविध कर्म से रहित हुए हैं, आठों कर्म नशाए।
सिद्ध शिला पर धाम बनाया, मंगल सिद्ध कहाए।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता भाव धारने वाले, रत्नत्रय के धारी।
सहते हैं उपसर्ग परीषह, साधु मंगलकारी।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।

ॐ ह्रीं साधुमंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म केवलज्ञानी कृत, जानो जग हितकारी।
सुख शांति सौभाग्य प्रदायक, जग में मंगलकारी।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्म-मंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज : नन्दीश्वर श्री जिन धाम.....)

हे लोकोत्तम ! अरहन्त, जग-जन हितकारी।
हो जाए भव का अन्त, भव-भव दुख हारी।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव-भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हन्त लोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सिद्ध शिला के ईश, शिव सुख के कर्त्ता।
हे लोकोत्तम ! जगदीश, कर्मों के हर्त्ता।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्यादि निर्ग्रंथ रत्नत्रय धारी।
यह लोकोत्तम है संत, अतिशय अविकारी।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव-भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधुलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी उपदिष्ट, जैन धरम जानो।
है लोकोत्तम जग इष्ट, हितकारी मानो।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव-भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलिप्रज्ञप्त-धर्मलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

शरण श्रेष्ठ है अर्हन्तों की, सारे जग में पावन।
सुख शांति आनन्द प्राप्त हो, जीवन हो मन भावन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्शरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शरण है मंगलकारी, हम भी शरणा पाएँ।
कर्म नाशकर अपने सारे, भव में न भटकाएँ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।

ॐ ह्रीं सिद्धशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनाचार्य उपाध्याय साधु, होते पञ्चाचारी।
शरण प्राप्त हो हमको उनकी, पाने पद अविकारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।

ॐ ह्रीं साधुशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म केवलज्ञानी कृत, उत्तम शरण कहाये।
पाया नहीं है अब तक हमने, अत: जगत भटकाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्त-धर्मशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेष्ठी मंगल हैं उत्तम, चार शरण सुखकारी।
भवि जीवों के लिए अनादि, होते मंगलकारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि-सप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **परमेष्ठी जिन पञ्च हैं, मंगल उत्तम चार।**
शरण चार हैं भक्ति के, परम पूज्य आधार।।

(छन्द चौपाई)

विघ्न विनाशी आप कहाए, नर सुर के स्वामी कहलाए।
अग्रेसर जिनवर को जानो, इष्ट सभी जीवों को मानो।।
अनाद्यनन्त कहा जो भाई, जग में फैली है प्रभुताई।
मम विघ्नों का वारण कीजे, विनती मेरी यह सुन लीजे।।
मुनियों के आधीश कहाए, गणाधीश इस जग में गाए।
स्तुति जिनकी मंगलकारी, सब विघ्नों की नाशनहारी।।
शांति प्रदायक जग में भाई, जिनवर की स्तुति अधिकाई।
कलुषित कली काल के प्राणी, मिथ्यावादी हैं अति मानी।।
भव्य जीव सद्दर्शन पावें, ज्ञान सुधारस सम हो जावें।
पाप पुञ्ज नश जाए सारा, जीवन मंगलमय हो प्यारा।।
यही मान्य गणराज कहाए, जिनकी भक्ति शान्ति दिलाए।
विनय आपकी जो भी धारें, वह सब दोषों को परिहारे।।
नाम आपका जो भी ध्यावें, श्रेष्ठ गुणों को वह पा जावें।
इष्ट सिद्धि हो जावे भाई, यह जिन भक्ति की प्रभुताई।।
जय-जय हो जिनराज तुम्हारी, सर्व गुणों के तुम अधिकारी।
महिमा यहाँ आपकी गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
सुर-गुरु कोटि वर्ष तक गावें, तो भी पूर्ण नहीं कह पावें।
'विशद' अल्प बुद्धि के धारी, वह गुण क्या तुमरे कह पावें।।

सोरठा- **तुम हो सर्व महान्, हम दोषों के कोष हैं।**
किया अल्प गुणगान, अल्पबुद्धि से आपका।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदश मन्त्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **बुद्धि अनाकुल होय, धर्म प्रीति जागे परम।**
मोक्ष प्राप्त हो सोय, जैन धर्म को धारकर।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

विनय पाठ

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान् ।।
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव।।
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान्।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
य: स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचि:।।2।।
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशन:।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलं मत:।।3।।
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।।4।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिन:।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वत: प्रणमाम्यहं।।5।।
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं।।6।।
विघ्नौघा: प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगा:।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

पंचकल्याणक का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकाम:।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो न: स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजित:।
श्री संभव: स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दन:।
श्री सुमति: स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभ:।
श्री सुपार्श्व: स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभ:।
श्री पुष्पदन्त: स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतल:।
श्री श्रेयांस: स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्य:।
श्री विमल: स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्त:।
श्री धर्म: स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्ति:।
श्री कुन्थु: स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथ:।

श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्बृहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।3।।
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।4।।
जङ्घावल-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।
अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्वलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।8।।
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमलौषधीशाः,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो नः।।9।।
क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास महानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

(इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र-गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादि से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उनसे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभि पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ति हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ति मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रस्तावना : वास्तु विधान

अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को करें नमन्।
इनकी पूजा वन्दन करने से, हो जाते कर्म शमन।।1।।

प्रभु की पूजा अर्चा से हो, भक्तों के मन में संतोष।
यह मानव जीवन बनता है, प्रभु की अर्चा से निर्दोष।।2।।

विघ्न और बाधाएँ मानव, जीवन में लाती हैं क्लेश।
इष्ट वियोग संयोग अनिष्ट से, होता भाई राग-द्वेष।।3।।

भूत-प्रेत कृत ग्रह बाधा से, वास्तु कृत उपद्रव होते।
आकुल व्याकुल होते मानव, तन-मन की सुध-बुध खोते।।4।।

पूर्वोपार्जित कर्म योग से, सुख-दुःख पाते हैं जग जीव।
किन्तु ग्रहादि बाधाओं से, बढ़ जाते हैं दुःख अतीव।।5।।

मूढ़ और अज्ञानी प्राणी, कई कुदेव आदि के पास।
देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा तज, लेकर के जाते हैं आस।।6।।

यदि कुदेव कुछ दे सकते तो, निज भक्तों को देते दान।
किन्तु निर्धन दुखियारों से, भरा हुआ यह दिखे जहान।।7।।

निज के पुण्य पाप के फल से, प्राणी का जागे सौभाग्य।
अतः प्रभु की पूजा करके, अपना विशद जगाओ भाग्य।।8।।

सुख-शांति में हेतू बनता, प्राणी को यह वास्तु विधान।
विघ्न नाश हो जाते उनके, जो रखता है सद् श्रद्धान।।9।।

एक ऊन पञ्चाशत होते, सारे जग में वास्तु देव।
वास्तु विधि बिगड़ जाने पर, दुखकर होते यही सदैव।।10।।

बाधाओं से बचने हेतू, वर्ष में दो यह करो विधान।
शुद्धिपूर्वक पूजा करके, यश पाओ जग में सम्मान।।11।।

वास्तु विधान कब करें ?

कलह निरन्तर गृह में हो यदि, आज्ञा नहीं मानते लोग।
बिल्ली कुत्ता रोये गृह में, काग सर्प उल्लू का योग।।1।।
मधु मक्खी का लागे छत्ता, तड़ित अग्नि का होय प्रकोप।
टोना टोटक हड्डी आदि, सुख-शांति, का कर दे लोप।।2।।
णमोकार या भक्तामर का, शुभ अखण्ड करवाना पाठ।
वास्तु देव की पूजा से फिर, हो जाएँगे ऊँचे ठाठ।।3।।
मण्डल की रचना करके शुभ, भक्ति भाव से करो विधान।
सुख-शांति सौभाग्य जगेगा, मन में यह रखना श्रद्धान।।4।।
शांति हवन कर पुण्याहवाचन, यथा शक्ति करके शुभ दान।
इच्छा मन की होगी पूरी, करके जिन चरणों का ध्यान।।5।।
जिनवर कथित धर्म ये पावन, सारे जग में मंगलकार।
रक्षा करता है तन-मन की, सुख-शांति प्रगटाए अपार।।6।।
भूमि शुद्धि या शिलान्यास हो, तब भी करना वास्तु विधान।
हो नवीन गृह में प्रवेश या, खोले कोई नई दुकान।।7।।
आत्म घात हो सूतक हो या, रंग रोगन का कीन्हा काम।
हो विवाह आदि का अवसर, यज्ञ का होवे पूर्ण विराम।।8।।
वार्षिक अर्द्धवार्षिक पूजा, में यह करना वास्तु विधान।
श्री जिनेन्द्र की अनुकम्पा से, होगी सब विघ्नों की हान।।9।।
खाली कभी नहीं जाती है, भक्तों की पूजा गुणगान।
'विशद' भाव से अर्चा करके, अपना करो शीघ्र कल्याण।।10।।
श्रद्धा युत जिनवर की पूजा, मोक्ष मार्ग भी करें प्रदान।
सुख-शांति सौभाग्य प्रदायक, देती है जो पद निर्वाण।।11।।

अथ वलय पूजा

दोहा- पुष्पाञ्जलि के साथ अब, अर्घ्यों का प्रारम्भ।
करते भक्ति भाव से, शांति हो आरम्भ।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

जो अखण्ड अविनाशी अनुपम, नित्य निरन्जन हैं अविकार।
सिद्ध शुद्ध त्रैकालिक शाश्वत्, विशद ज्ञानधारी शुभकार।।
निर्विकार चैतन्य स्वभावी, ज्ञाता दृष्टा सद्गुणवान।
ज्ञायक अव्याबाध स्वभावी, सिद्धों का करते गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं वास्तु दोष निवारणाय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिशाओं के बीजाक्षर सहित 8 अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

जिन तीर्थंकर जिनवरवाणी, गणधर ऋषियों के पद वन्दन।
सब दोष निवारण करने को, शुभ वास्तु विधान का है अर्चन।।
आरोग्य निराकुल जीवन हो, सुख शांति सम्पदा हम पावें।
वसु द्रव्यों से पूजा करते, न भव वन में अब भटकावें।।

ॐ ह्रीं अर्हं वास्तु दोष निवारणाय देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

प्रथम मातृका में स्वर गाए, जिनवर की वाणी कहलाए।
वास्तु दोष से शांति दिलाएँ, अतः भाव से अर्घ्य चढ़ाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ इ उ ऋ लृ वास्तुदोष निवारणाय अरहन्त देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क ख ग घ वर्ण बताए, द्वितिय मातृका जिनवर गाए।
वास्तु दोष से शांति दिलाएँ, अतः भाव से अर्घ्य चढ़ाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं क ख ग घ वास्तुदोष निवारणाय अरहन्त देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

च छ ज झ हैं शुभकारी, तृतीय मातृका मंगलकारी।
वास्तु दोष से शांति दिलाएँ, अतः भाव से अर्घ्य चढ़ाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ वास्तुदोष निवारणाय अरहन्त देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ट ठ ड ढ़ अक्षर भाई, श्रेष्ठ मातृका चौथी भाई।
वास्तु दोष से शांति दिलाएँ, अतः भाव से अर्घ्य चढ़ाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ वास्तुदोष निवारणाय अरहन्त देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त थ द ध अक्षर गाए, पंचम मातृका के बतलाए।
वास्तु दोष से शांति दिलाएँ, अतः भाव से अर्घ्य चढ़ाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध वास्तुदोष निवारणाय अरहन्त देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प फ ब भ रहे निराले, अक्षर छठी मातृका वाले।
वास्तु दोष से शांति दिलाएँ, अतः भाव से अर्घ्य चढ़ाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ वास्तुदोष निवारणाय अरहन्त देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

य र ल व अक्षर जानो, सप्तम श्रेष्ठ मातृका मानो।
वास्तु दोष से शांति दिलाएँ, अतः भाव से अर्घ्य चढ़ाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व वास्तुदोष निवारणाय अरहन्त देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊष्मक श ष स ह हैं भाई, श्रेष्ठ मातृका अष्टम गाई।
वास्तु दोष से शांति दिलाएँ, अतः भाव से अर्घ्य चढ़ाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह वास्तुदोष निवारणाय अरहन्त देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट मातृकाएँ यह जानो, शब्द ब्रह्ममय जो पहिचानो।
वास्तु दोष से शांति दिलाएँ, अतः भाव से अर्घ्य चढ़ाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिशागत वास्तुदोष निवारणाय अरहन्त देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश दिशागत विघ्न निवारक

दोहा- पूर्व दिशागत विघ्न का, क्षण में होय विनाश।
जिन पूजा से शांति हो, पूरी होवे आश।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व दिशागत विघ्न निवारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय के विघ्न का, क्षण में होय विनाश।
सुख-शांति सौभाग्य का, होवे शीघ्र प्रकाश।।2।।

ॐ ह्रीं आग्नेय दिशागत विघ्न निवारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश के विघ्न का, रहे न नाम निशान।
श्री जिनेन्द्र का भाव से, करो विशद गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं दक्षिण दिशागत विघ्न निवारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न दिशा नैऋत्य से, बाधा करें विशेष।
श्री जिनेन्द्र के जाप से, रहे कोई न शेष।।4।।

ॐ ह्रीं नैऋत्य दिशागत विघ्न निवारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम से आते विघ्न, जिनका नहीं है पार।
देव शास्त्र गुरु अर्चना, से होवे संहार।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशागत विघ्न निवारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न दिशा वायव्य से, आते अपरम्पार।
जिन गुरु के आशीष से, मिलता उनसे पार।।6।।

ॐ ह्रीं वायव्य दिशागत विघ्न निवारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशा का विघ्न भी, जिन पूजा से जाय।
मानव खुश होके सदा, अतिशय हर्ष मनाय।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तर दिशागत विघ्न निवारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न दिशा ईशान से, करें सुखों में हान।
श्रद्धा हो जिन धर्म में, जीवन बने महान्।।8।।

ॐ ह्रीं ईशान दिशागत विघ्न निवारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्व दिशागत विघ्न भी, मन में क्षोभ दिलाय।
जिन पूजा से मुक्ति नर, सब विघ्नों से पाय।।9।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व दिशागत विघ्न निवारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधो दिशा के विघ्न सब, करते हमें अशांत।
जिन पूजा से वह सभी, हो जाते उपशांत।।10।।

ॐ ह्रीं अधो दिशागत विघ्न निवारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सर्व दिशागत दोष का, होवे पूर्ण विनाश।
सुख शांति सौभाग्य हो, पूर्ण शुभ आस।।

ॐ ह्रीं सर्वदिशागत विघ्न निवारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवग्रह निवारक (जोगीरासा)

रवि ग्रह श्रेष्ठ प्रतापी जानो, यश कीर्ति उपजावे।
राशी मध्य बली जब होवे, कीर्ति पूर्ण नशावे।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।1।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र समान सुउज्ज्वल कीर्ति, चन्द्र सुग्रह फैलाए।
राशि में बक्री बनकर के, उल्टा असर दिखाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।2।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल ग्रह मंगलमयी जानो, जग में मंगलकारी।
वक्री बन जाए राशि में, बने अमंगलकारी।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।3।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ स्थान प्राप्त कर, बुध ग्रह बुद्धिमान बनाए।
ज्योतिष लेखक वाद कुशलता, शब्द कुशलता पाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।4।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु ग्रह महिमाशाली माया, गुरुतम पद दिलवाए।
सच्चारित्र वान सद्धर्मी, शुभ स्थान दिलाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।5।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभादि अष्ट जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

काव्य कवि ऐश्वर्य सरलता, वात्सल्य गुण पाए।
शुक्र रहे राशि में वक्री, तो अपयश फैलाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु संकट सेवक तस्कर, क्रूर प्रवृत्ति करवाए।
शुभ स्थान मिले राशि में, तो बहु यश फैलाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।7।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राहु ग्रह कटु वक्ता रोगी, दुष्ट प्रवृत्ति कराए।
नर को विधु नारी को विधवा, जैसे दुःख दिलाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।8।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केतु ग्रह वक्री बनकर के, अतिशय दुःखी बनाएँ।
तंत्र मंत्र जादू टोना कृत, दर्द घाव भी पाएँ।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।9।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के गुण की महिमा, आज यहाँ पर हम गाते।
नवग्रह की पीड़ा से बचने, हे प्रभु ! चरणों सिर नाते।।
वास्तु दोष दूर हों सारे, यही भावना हम भाते।
'विशद' शांति सौभाग्य जगाने, अर्घ्य चढ़ाने हम आते।।10।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवदेवता के अर्घ्य *(शम्भू छंद)*

कर्म घातिया नाश किए जिन, दोष अठारह रहित महान।
करुणाकर हैं जगत हितैषी, मंगलमय अर्हत् भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ अनन्त भवार्णव भय निवारक श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्म नाशकर, उत्तम पद पाए निर्वाण।
अविनाशी अक्षय अखण्ड पद, पाए श्री सिद्ध भगवान।।2।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ अनन्त भवार्णव भय निवारक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार समीति गुप्ति, आवश्यक तप तपें महान्।
जैनाचार्य धर्म के धारी, त्रिभुवन गुरु कहे गुणवान।।3।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ अनन्त भवार्णव भय निवारक श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, ज्ञाता जग में रहे प्रधान।
स्व-पर के उपकार हेतू जो, देते सबको सम्यक् ज्ञान।।4।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ अनन्त भवार्णव भय निवारक उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, रत्नत्रय धारी गुणवान।
परम दिगम्बर निर्भय साधु, जैन धर्म की अनुपम शान।।5।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ अनन्त भवार्णव भय निवारक श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम अहिंसामयी धर्म की, महिमा जो भी गाते हैं।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महल को जाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ जिनधर्म अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐकारमय जिनवाणी को, अपने हृदय सजाते हैं।
विशद ज्ञान के धारी बनकर, केवलज्ञान जगाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ जैनागम अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिम्बों की, अर्चा करते बारम्बार।
अल्पकाल में भव्य जीव वह, शिवपद पाते अपरम्पार।।8।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ जिनचैत्य अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यालय, तीन लोक में रहे महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, गाते हैं प्रभु का गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ जिनचैत्यालय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नव देवों के चरण की, पूजा है शुभकार।
सुत सम्पत्ती प्राप्त कर, होवें भव से पार।।10।।

8 ऋद्धि के अर्घ्य *(चाल छंद)*

है बुद्धि ऋद्धि शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।
सुख ऋद्धि सिद्धि दिलवाए, जीवों में ज्ञान जगाए।।1।।

ॐ ह्रीं बुद्धि ऋद्धि प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है ऋद्धि विक्रिया भाई, सारे जग में सुखदायी।
सुख ऋद्धि सिद्धि दिलवाए, जीवों में ज्ञान जगाए।।2।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धि प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं क्रिया ऋद्धि के धारी, ज्ञानी मुनिवर सुखकारी।
सुख ऋद्धि सिद्धि दिलवाए, जीवों में ज्ञान जगाए।।3।।

ॐ ह्रीं क्रिया ऋद्धि प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप ऋद्धि मुनिवर पाते, तप करके कर्म नशाते।
सुख ऋद्धि सिद्धि दिलवाए, जीवों में ज्ञान जगाए।।4।।

ॐ ह्रीं तप ऋद्धि प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल ऋद्धि भूषित स्वामी, मुनिवर पाते शिवगामी।
सुख ऋद्धि सिद्धि दिलवाए, जीवों में ज्ञान जगाए।।5।।

ॐ ह्रीं बल ऋद्धि प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औषधि ऋद्धि जो पावें, शिवपुर गामी कहलावें।
सुख ऋद्धि सिद्धि दिलवाए, जीवों में ज्ञान जगाए।।6।।

ॐ ह्रीं औषधि ऋद्धि प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि अक्षीण कहाएँ, जो जैन ऋषि प्रगटाएँ।
सुख ऋद्धि सिद्धि दिलवाए, जीवों में ज्ञान जगाए।।
रस ऋद्धि मुनिवर पावें, नीरस को सरस बनावें।
यह अष्ट ऋद्धियाँ पावें, अनगारी शिवपुर जावें।

ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षं क्षौं प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ नवदेवेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशेष अर्घ्य

दोहा– शांति मंत्र यह लोक में, करता शांति प्रदान।
करे जाप जो भाव से, हो उसका कल्याण।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्तिकराय सर्वविघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय (...) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु–कुरु जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वास्तु दोष से पीड़ित प्राणी, दीन–हीन हो रहते हैं।
पाप कर्म से आधि–व्याधि कई, देवोंकृत दुख सहते हैं।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा से सब, वास्तु देव खुश हो जाते।
रक्षा करते क्षेत्रपाल तब, खुश हो देव वहाँ आते।।1।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृषभादिक महावीर प्रभु के, गणधर जग में हुए महान्।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, का करते हैं जो गुणगान।।
वृषभसेन आदिक चौदह सौ, बावन हुए हैं मंगलकार।
उनके चरणों 'विशद' भाव से, वन्दन मेरा बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरों के चर्तुदश शत् द्विपञ्चाशत गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तामर के पाठ से, ऋद्धि वृद्धि हो प्राप्त।
वास्तु विधान के अर्चते, हो शिव सुख सम्प्राप्त।।3।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ भक्तामर स्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्रनाम की अर्चना, भू गत विघ्न नशाय।
करके वास्तु विधान शुभ, सुख शांति प्रगटाय।।4।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ सहस्रनाम स्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याणक तीर्थेश के, होते मंगलकार।
वास्तु की पूजा किए, हो सुख के आधार।।5।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ पंचकल्याणक अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थ क्षेत्र निर्वाण शुभ, एवं अतिशयकार।
करके वास्तु विधान जो, बने श्री दातार।।6।।

ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणार्थ अतिशय निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र के नाम मंत्र से, वृद्धि पाते जग के लोग।
वर्धमान शुभ मंत्र जाप से, वर्धमानता का हो योग।।7।।

ॐ ह्रीं णमो भयवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जयेवा विवादेवा थंभणे वा, रणंगणं वा, रायंगणे वा, मोहेण वा, सव्वजीवसत्ताणं, अपराजिदो भवदुरक्खं रक्ख अर्घ्यं स्वाहा।

बीजाक्षर से निर्मित होते, रक्षाकारी मंत्र महान्।
संकट में जो पढ़े भाव से, उनकी रक्षा होय प्रधान।।8।।

ॐ ह्रूँ क्षूं फट् किरिटं किरिटं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द-छिन्द परमंत्रान् भिन्द-भिन्द क्षाः क्षः वाः वाः वास्तुदोष निवारणाय ह्रूँ फट् स्वाहा।

कलिकुण्ड का मंत्र श्रेष्ठ शुभ, श्रेष्ठ सौख्य उपजाता है।
भाव शुद्ध हो जाप करे जो उसके विघ्न नशाता है।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सेविताय अतुल बल वीर्य पराक्रमाय ममात्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिंद-छिंद भिंद-भिंद स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौ स्फ्रः वास्तु दोष निवारणाय ह्रूँ फट् स्वाहा।

णमोकार है महामंत्र शुभ, मृत्युञ्जय कहलाता है।
महामंत्र को ध्यानेवाला, श्रीपति शिवपद पाता है।।10।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं, वास्तु दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चरणों के भक्त यहाँ पर, वास्तु देव तुम भी आओ।
भक्ति भाव से पूजा करके, प्रभु के गुण अनुपम गाओ।।11।।

ॐ ह्रीं वास्तुदेव विघ्न निवारणाय श्री परम सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वचन काय हो अन्तर्मुख, विषयों से मन अब हट जाए।
शुभ पद अनर्घ्य पाने हेतु, यह अर्घ्य बनाकर हम लाए।।
हम सप्त ऋषि की पूजाकर, अपना सौभाग्य जगाऐंगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाऐंगे।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन्वादि सप्त ऋषिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्मुहूर्तादि के अर्घ्य
(विष्णुपद छंद)

दुर्मुहूर्त शकुनादि से हों, बाधाएँ भारी।
महामंत्र के जाप से नशती, हैं बाधा सारी।।1।।

ॐ ह्रीं दुर्मुहूर्त निवारणाय श्री परम सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत-पिशाच शाकिनी डाकिन, करें विघ्न भारी।
जिनवर की अर्चा से वह भी, बनते हितकारी।।2।।

ॐ ह्रीं शाकिनी डाकिनी निवारणाय श्री परम सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आधि-व्याधि बाधाएँ होती, जग में दुःखदायी।
वह भी बाधा जिन भक्ति से, नश जाए भाई।।3।।

ॐ ह्रीं आधि-व्याधि निवारणाय श्री परम सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परकृत तंत्र मंत्र आदि से, कष्ट सहे भारी।
जिन अर्चा से वह बाधाएँ, नशती हैं सारी।।4।।

ॐ ह्रीं तंत्र-मंत्र निवारणाय श्री परम सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्नों के कारण गृह व मन में, हो क्लेश भारी।
आत्म घातकर लेते हैं कई, अतिशय भयहारी।।5।।

ॐ ह्रीं विघ्न निवारणाय श्री परम सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो शांति सर्वत्र लोक में, हों निरोग प्राणी।
मैत्री हो जन-जन में भाई, कहें मधुर वाणी।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोपशान्ताय श्री परम सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

धन वैभव न क्षीण हो, सुख शांति न क्षीण।
भाँति-भाँति के सुख बढ़े, कभी न होवे दीन।।7।।

ॐ ह्रीं धनधान्य वृद्धि समृद्धि करणाय श्री परम सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वजन सभी अनुकूल हों, रहें लघु स्थान।
बने महालय पुण्य से, पूजा किये महान्।।8।।

ॐ ह्रीं पुत्र-पौत्रादि स्वजन अनुकूलय आरोग्य वृद्धिकराय श्री परम सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो विकार पृथ्वी में कोई, या होवे यदि सलिल प्रवेश।
अग्नि का हो दाह कदाचित, वायु प्रकोप जिनगृह के देश।।
चौर प्रयोग आदि से रक्षा, आके करो वास्तु के देव।
चैत्यालय यजमान गृहों में, ठहरो रक्षा हेतु सदैव।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः णमो अरिहंताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउविध संघ और श्रावक सब, सुख समृद्धि पावें।
अष्ट ऋद्धियाँ धन वैभव पा, केवलज्ञान उपावें।।10।।

ॐ ह्रीं चतुर्विध संघस्य शांतिं तुष्टिं पुष्टिं वृद्धिं समृद्धिं प्रदाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म मरण से विरहित हैं जो, सर्व तत्त्व के ज्ञाता।
चरण वंदना से मिट जाती, भव की पूर्ण असाता।।11।।

ॐ ह्रीं भूर्भुव स्वः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पूजन चिन्तामणि जानो, चिंतित सुख उपजावे।
धर्म ध्यान अरु धन समृद्धि, सबको श्रेष्ठ दिलावे।।12।।

ॐ ह्रीं क्रों आं अनुत्पन्नानां द्रव्याणामुत्पादकाय उत्पन्नानां द्रव्याणां वृद्धिंकराय चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमः स्वाहा।

क्षेत्र के रक्षक क्षेत्रपाल हैं, आज्ञा लेना है अनिवार्य।
देकर भेंट काम जो करते, सफल शीघ्र होता वह कार्य।।13।।

ॐ आं क्रौं अत्रस्थ विजयभद्र-वीरभद्र-मणिभद्र,भैरवापराजित ! पंच क्षेत्रपाला इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षत यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यातामिति स्वाहा।

वास्तु देव पूजा

पूजा से जिनराज की, होवें विघ्न विनाश।
वास्तु देव इन्द्रादि सब, बनें चरण के दास।।

ॐ ह्रीं श्री भूःस्वाहा। (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(1) इन्द्रदेव पूजा

कहा वास्तु का देव इन्द्र है, विघ्न कई उपजावे।
जिन अर्चा करने से वह भी, चरणों में झुक जावे।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ावे।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजावे।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे अग्निदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
ॐ ह्रीं इन्द्राय स्वाहा, इन्द्र परिजनाय स्वाहा, इन्द्र अनुचराय नमः, वरुणाय नमः, सोमाय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, ॐ स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा, भूर्भुव स्वाहा, स्वः स्वाहा, स्वधा स्वाहा। हे इन्द्रदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलि, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ कोष्ट, उपलेट, फूल चढ़ाएँ।

(2) ब्रह्मदेव पूजा

वास्तु देव है ब्रह्म अनोखा, महिमा को कह पावे।
भक्तों का सब दुःख नशाए, शांति सौख्य दिलावे।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ावे।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजावे।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे ब्रह्मन् ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

बलि मंत्र

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे स्वाहा, ब्रह्म परिजनाय स्वाहा, ब्रह्म अनुचराय नमः, वरुणाय नमः,

सोमाय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, ॐ स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा, भूर्भुव स्वाहा, स्वः स्वाहा, स्वधा स्वाहा। हे ब्रह्मण ! इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। **(बलि से अर्थ देव योग्य भोज्य सामग्री से लिया गया है।)**

(शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्)

नोट– अर्घ्य के साथ चावल की धानी, घी, शक्कर, खीर और तगर चढ़ाएँ इस प्रकार आगे भी जिस–जिस देव के जो–जो भक्ष्य पदार्थ हैं उन्हें उनके कोठों पर अर्घ्य के साथ चढ़ाएँ तथा प्रत्येक अर्घ्यं के साथ ध्वजा लें। इस प्रकार 49 कोठों पर ही चढ़ाएँ

(3) अग्निदेव पूजा

अग्नि देव विघ्न उपजाकर, मन में खेद बढ़ावे।
पूजा करने से जिनवर की, दास बने झुक जावे।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ावे।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख–शांति उपजावे।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे अग्निदेव ! अत्र आगच्छ–आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे अग्निदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ दूध, घी, तगर चढ़ाएँ।

(4) यमदेव पूजा

यम है वास्तु देव निराला, इस जग में दुःखदायी।
जिन पूजा से वह भी चरणों, में झुक जावे भाई।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ावे।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख–शांति उपजावे।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे यमदेव ! अत्र आगच्छ–आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे यमदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ तिल का चूर्ण, तुअर का बाकरा चढ़ाएँ।

(5) नैऋत्यदेव पूजा

वास्तु देव नैऋत्य जरा भी, शांति न होने देवें।
जीवन की सारी खुशियों को, क्षणभर में हर लेवे।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ावे।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख–शांति उपजावे।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं नीलवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे नैऋत्यदेव ! अत्र आगच्छ–आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे नैऋत्यदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ तिल का तेल, तिल की पापड़ी चढ़ाएँ।

(6) वरुणदेव पूजा

वरुण देव को खुश करना, तो कठिन रहा है भारी।
देव शास्त्र गुरु की पूजा से, हो जाए उपकारी।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ावे।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख–शांति उपजावे।।6।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे वरुणदेव ! अत्र आगच्छ–आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे वरुणदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ धाणी, दूध पाक (रबड़ी), खीर चढ़ाएँ।

(7) पवनदेव पूजा

वास्तु देव पवन की शक्ति, सबकी जानी मानी।
जिन पूजा कर खुश करने से, कभी करे न हानी।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ावे।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजावे।।7।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे पवनदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे पवनदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ पिसी हल्दी चढ़ाएँ।

(8) कुबेरदेव पूजा

वास्तु देव स्वयं खुश होकर, इच्छित वस्तु दिलावे।
सुख-शांति आनन्द सुयश वह, मानव को उपजावे।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ावे।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजावे।।8।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे कुबेरदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे कुबेरदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ दूध में मिलाया हुआ भात चढ़ाएँ।

(9) ईशानदेव पूजा

वास्तु देव ईशान कुपित हो, भारी खेद बढ़ावे।
पूजा करने से जिनवर की, वह भी खुश हो जावे।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ावे।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजावे।।9।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शुभ्रवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे ईशानदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे ईशानदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ घी, क्षीरान्न चढ़ाएँ।

(10) आर्यदेव पूजा

कर्मोदय से आर्य वस्तु भी, खेद बढ़ावे भारी।
जिन पूजा करने से वह भी, बन जावे उपकारी।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ावे।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजावे।।10।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शुभ्रवर्ण सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे आर्यदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे आर्यदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ मैदा का घूगरा और फल चढ़ाएँ।

(11) विवस्वानदेव पूजा

विवस्वान वास्तु देता है, लोगों को दुःख भारी।
जिन अर्चा से खुश हो जावे, होवे मंगलकारी।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ावे।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजावे।।11।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे विवस्वान देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे विवस्वान देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ उड़द की घूंगरी तिल चढ़ाएँ।

(12) मित्रदेव पूजा

मित्र नाम है वास्तु देव का, श्रेष्ठ मित्र उसका बन जाय।
जो जिनवर की करे अर्चना, उसके सारे दोष नशाय।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ाती है।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजाती है।।12।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे मित्रदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे मित्रदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ 'मैदा की भुजिया' चढ़ाएँ।

(13) भूधरदेव पूजा

वास्तु देव का नाम है भूधर, जो भारी उत्पात मचाये।
जो जिनवर की करे अर्चना, उसके सारे कष्ट नशाय।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ाती है।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजाती है।।13।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे भूधरदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे भूधरदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ दूध चढ़ाएँ।

(14) सविन्द्रदेव पूजा

वास्तु देव सविन्द्र कहाए, देता है लोगों को त्रास।
जिनवर हैं आराध्य देव की, पूजा से बन जाए दास।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ाती है।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजाती है।।14।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं नीलवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे सविन्द्रदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे सविन्द्रदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ चावल की धाणी और धनिये की धाड़ी चढ़ाएँ।

(15) साविन्द्रदेव पूजा

वास्तु देव साविन्द्र कहाए, मन में उपजाए संताप।
जिन अर्चा करने से खुश हो, भक्तों के सब मैटे ताप।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ाती है।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजाती है।।15।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धूम्रवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे साविन्द्रदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे साविन्द्रदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ कपूर, कश्मीर केशर, लवंग आदि सुगन्धित द्रव्यों से मिश्रित फल चढ़ाएँ।

(16) इन्द्रदेव पूजा

इन्द्र वास्तु की महिमा अनुपम, जिसकी रही निराली शान।
जिन भक्तों को सुखी बनाए, करके जो सहयोग महान्।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ाती है।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख-शांति उपजाती है।।16।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे इन्द्रदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे इन्द्रदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ मूँग का चूर्ण और फूल चढ़ाएँ।

(17) इन्द्रराजदेव पूजा

इन्द्रराज को सभी जानते, होय कुपित तो दुखी करे।
जिन अर्चा से खुश हो जाए, लोगों के सब दुःख हरे।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ाती है।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख–शांति उपजाती है।।6।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेतवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे इन्द्रराजदेव ! अत्र आगच्छ–आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे इन्द्रराजदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ चावल के बड़े और मूँग का चूर्ण चढ़ाएँ।

(18) रुद्रदेव पूजा

वास्तु देव है रुद्र अनोखा, आर्त्त रौद्र करते परिणाम।
जिन पूजन की सेवा में जो, तत्पर रहता आठों याम।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ाती है।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख–शांति उपजाती है।।18।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रवालवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे रुद्रदेव ! अत्र आगच्छ–आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे रुद्रदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ गुड़, मैदा का घूगरा चढ़ाएँ।

(19) रुद्रराजदेव पूजा

दुष्ट देव है रूद्रराज अति, सुख शांति का करे विनाश।
जिन पूजा जो करे भाव से, मित्र बने उसका जो खास।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ाती है।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख–शांति उपजाती है।।19।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पीतवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे रुद्रराजदेव ! अत्र आगच्छ–आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे रुद्रराजदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ गुड़, चावल का आटा, अम्बोली (इमली) चढ़ाएँ।

(20) आप्देव पूजा

आप् नाम है वास्तु देव का, उपजावे भारी संताप।
जिन भक्तों के हरने वाला, होता है जो सारे ताप।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ाती है।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख–शांति उपजाती है।।20।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेतवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे आप्देव ! अत्र आगच्छ–आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे आप्देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ गुड़, चावल, आटा, सफेद कमल, अम्बोली चढ़ाएँ।

(21) आपवत्स देव पूजा

आपवत्स है वास्तु देव का, नाम जहाँ में दुखहारी।
जिन पूजा करने से वह भी, साथी बनता सुखकारी।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भाई, अतिशय पुण्य बढ़ाती है।
विघ्न नाश हो जावें सारे, सुख–शांति उपजाती है।।21।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शंखवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे आपवत्स देव ! अत्र आगच्छ–आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे आपवत्स देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ गुड़, चावल का आटा, सफेद कमल, शंख, अम्बोली चढ़ाएँ।

(22) पर्जन्यदेव पूजा

दोहा– वास्तु देव पर्जन्य भी, करे खूब उत्पात।
पूजा जिनवर की करे, तो हर ले संताप।।22।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं जलवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे पर्जन्य देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे पर्जन्य देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ घी चढ़ाएँ।

(23) जयन्तदेव पूजा

दुखी करे इस लोक में, वास्तु देव जयन्त।
जिन अर्चा जो भी करे, दुःखों का हो अन्त।।23।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे जयन्त देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे जयन्त देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन चढ़ाएँ।

(24) भास्करदेव पूजा

भास्कर वास्तु देव का, दुःख देना है काम।
जिन पूजा जो भी करे, रहे न दुःख का नाम।।24।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेतवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे भास्कर देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे भास्कर देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ गुड़ और सफेद फूल चढ़ाएँ।

(25) सत्यक् देव पूजा

वास्तु देव है सत्य जो, वह भी है दुखकार।
सत्य धर्म को धारिए, होंगे सब दुःख क्षार।।25।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्यामवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे सत्यक् देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे सत्यक् देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन चढ़ाएँ।

(26) भृषदेव देव पूजा

वास्तु देव भृष जीव को, देता भारी त्रास।
जिन पूजा से त्रास का, क्षण में होय विनाश।।26।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पुष्पवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे भृषदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे भृषदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन का गोला चढ़ाएँ।

(27) अन्तरिक्षदेव पूजा

वास्तु देव अन्तरिक्ष का, लेना दुखकर नाम।
जिन अर्चा में साथ वह, आकर करे प्रणाम।।27।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कुंदवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे अन्तरिक्ष देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे अन्तरिक्ष देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ हल्दी और उड़द का चूर्ण चढ़ाएँ।

(28) पूषदेव पूजा

वास्तु देव जो पूष है, वह है बड़ा विचित्र।
मोही से विपरीत हो, जिन भक्तों का मित्र।।27।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे पूषदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे पूषदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ तुअर के बाकरे व दूध चढ़ाएँ।

(29) वितथदेव पूजा

दुखकर वास्तु देव है, वितथ है जिसका नाम।
जिन भक्तों के साथ में, जिन को करे प्रणाम।।28।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्रचापवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे वितथ देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे वितथ देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ सौंठ, काली मिर्च व पीपल चढ़ाएँ।

(30) राक्षसदेव पूजा

राक्षस वास्तु देव का, रहा उपद्रव काम।
सर्व उपद्रव छोड़ता, जिन पूजा के नाम।।30।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कुंदवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे राक्षस देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे राक्षस देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ गुड़ चढ़ाएँ।

(31) गन्धर्वदेव पूजा

नाच नचावे जीव को, वास्तु देव गन्धर्व।
जिन पूजा से भक्त के, विघ्न नाश हों सर्व।।31।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे गन्धर्व देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे गन्धर्व देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ कपूर और सुगन्धित द्रव्य चढ़ाएँ।

(32) भृंगराजदेव पूजा

(मणुयानन्द छन्द)

भृंगराज वास्तु देव, दुःख देते अहा।
दुःख दे संतुष्ट होना, काम उसका रहा।।
अर्चना जो वीतरागी, देव की करता सही।
मैत्री उस जीव से, इस देव की मानो रही।।32।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं नीलवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे भृंगराज देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे भृंगराज देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ रबड़ी चढ़ाएँ।

(33) मृषदेव देव पूजा

वास्तु देव मृषदेव, दुःखकार जानिए।
करिए विश्वास नहीं, शत्रु सा मानिए।।
अर्चना जो वीतरागी, देव की करता सही।
मैत्री उस जीव से, इस देव की मानो रही।।33।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं मेषवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे मृषदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे मृषदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ उड़द की घूंगरी चढ़ाएँ।

(34) दोवारिकदेव पूजा

दौवारिक वास्तु देव, भटकाए यत्र तत्र।
शांति न मिल पाए, दुःख पाए सर्वत्र।।
अर्चना जो वीतरागी, देव की करता सही।
मैत्री उस जीव से, इस देव की मानो रही।।34।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे दोवारिक देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे दोवारिक देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ चावल का आटा चढ़ाएँ।

(35) सुग्रीवदेव पूजा

नाम सुग्रीव है वास्तु देव का सही।
भय शील रहती है जिससे सारी मही।।
अर्चना जो वीतरागी, देव की करता सही।
मैत्री उस जीव से, इस देव की मानो रही।।35।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं चन्द्रवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे सुग्रीव देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे सुग्रीव देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ लड्डू चढ़ाएँ।

(36) पुष्पदंतदेव पूजा

पुष्पदंत वास्तु देव, पुष्प के समान है।
भौंरे के जैसे वह ले लेता जान है।।
अर्चना जो वीतरागी, देव की करता सही।
मैत्री उस जीव से, इस देव की मानो रही।।36।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेतवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे पुष्पदंत देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे पुष्पदंत देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ फूल और जल चढ़ाएँ।

(37) असुरदेव पूजा

असुर वास्तु देव भी, भारी दुःखकार है।
पूजा जिनदेव की, सुख की आधार है।।
अर्चना जो वीतरागी, देव की करता सही।
मैत्री उस जीव से, इस देव की मानो रही।।37।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे असुर देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे असुर देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ लाल रंग का भात चढ़ाएँ।

(38) शोषदेव पूजा

वास्तु देव शोष है, विशेष है जहान में।
तत्पर जो रहता है, जिन के सम्मान में।।
अर्चना जो वीतरागी, देव की करता सही।
मैत्री उस जीव से, इस देव की मानो रही।।38।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धवलवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे शोषदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे शोषदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ तिल और अक्षत चढ़ाएँ।

(39) रोगदेव पूजा

रोग वास्तु देव भी, हरता सुख चैन है।
जग में हर जीव को, करता बैचेन है।।
अर्चना जो वीतरागी, देव की करता सही।
मैत्री उस जीव से, इस देव की मानो रही।।39।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सवितृवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे रोगदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे रोगदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ गुड़ की मीठी पूड़ी चढ़ाएँ।

(40) नागदेव पूजा

नागराज देव की, महिमा अपार है।
मानव के सिर पर जो, बन जाता भार है।।
अर्चना जो वीतरागी, देव की करता सही।
मैत्री उस जीव से, इस देव की मानो रही।।40।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शंखवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे नागदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे नागदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ शक्कर मिला हुआ दूध और पका भात चढ़ाएँ।

(41) मुख्यदेव पूजा

मुख्य वास्तु को मुखिया पहिचानिए।
करने में विघ्न जो आगे ही मानिए।।
अर्चना जो वीतरागी, देव की करता सही।
मैत्री उस जीव से, इस देव की मानो रही।।41।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं मौक्तिकवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे मुख्यदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे मुख्यदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ श्रीखंड चढ़ाएँ।

(42) भल्लाट देव पूजा

(ताटंक छंद)

वास्तु देव भल्लाट भाई, दुःख कई उपजाए।
छाया में भी मानव उसकी, सुख-शांति न पाए।।
जिनवर की पूजा जो करता, उससे यह घबराए।
सहयोगी बन जाए उसका, बाधा न पहुँचाए।।42।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेतवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे भल्लाट देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे भल्लाट देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ गुड़ और भात चढ़ाएँ।

(43) भृंगदेव पूजा

वास्तु देव भृंग अवसर पा, अपना असर दिखावे।
दुखी करे मन-वचन-काय से, चारों ओर घुमावे।।
जिनवर की पूजा जो करता, उससे यह घबराए।
सहयोगी बन जाए उसका, बाधा न पहुँचाए।।43।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तोत्पलवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे भृंगदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

हे भृंगदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ गुड़ के मालपुआ चढ़ाएँ।

(44) अदिति देव पूजा

वास्तु देव अदिति जगत में, शक्ति जो अपनावे।
शक्तिहीन करे औरों को, निज प्रभाव फैलावे।।
जिनवर की पूजा जो करता, उससे यह घबराए।
सहयोगी बन जाए उसका, बाधा न पहुँचाए।।44।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कपिलवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे अदिति देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे अदिति देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ मोदक (लड्डू) चढ़ाएँ।

(45) उदिति देव पूजा

उदित नाम है वास्तु देव का, कर्मोदय फल देवे।
सुख-शांति आनन्द जीव का, सारा जो हर लेवे।।
जिनवर की पूजा जो करता, उससे यह घबराए।
सहयोगी बन जाए उसका, बाधा न पहुँचाए।।45।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कुंदवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे उदितिदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे उदितिदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्)अर्घ्य के साथ मोदक लड्डू चढ़ाएँ।

(46) विचार्यदेव पूजा

वास्तु देव विचार्य लोक में, सबको दुःख पहुँचावे।
सबको पीछे छोड़के अपनी, महिमा जो फैलावे।।
जिनवर की पूजा जो करता, उससे यह घबराए।
सहयोगी बन जाए उसका, बाधा न पहुँचाए।।46।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्निवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे विचार्यदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे विचार्यदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ नमक डला हुआ भात चढ़ाएँ।

(47) पूतनादेव पूजा

नाम पूतना वास्तु देव का, पल-पल दुख उपजावे।
पास में आने से ही मानव, काँपे अरु घबड़ावे।।
जिनवर की पूजा जो करता, उससे यह घबराए।
सहयोगी बन जाए उसका, बाधा न पहुँचाए।।47।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हेमवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे पूतनादेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे पूतनादेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ तिल और भात चढ़ाएँ।

(48) पाप राक्षसी देव पूजा

वास्तु देव राक्षसी सबके, मन में भय उपजावे।
भय के कारण दुःखित होकर, रोवे अरु चिल्लावे।।
जिनवर की पूजा जो करता, उससे यह घबराए।
सहयोगी बन जाए उसका, बाधा न पहुँचाए।।48।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं मेघवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे पाप राक्षसी देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे पाप राक्षसी देव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ उबाले हुए मूँग चढ़ाएँ।

(49) चरकीदेव पूजा

चरकी वास्तु देव विघ्न कर, सबका सुख हर लेवे।
यत्र तत्र देवों की सेवा, में मानव चित् देवे।।

जिनवर की पूजा जो करता, उससे यह घबराए।
सहयोगी बन जाए उसका, बाधा न पहुँचाए।।49।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शंखवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे चरकीदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे चरकीदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ घी और गुड़ चढ़ाएँ।

(50) महार्घ्य

गृह मंदिर में रहने वाले, वास्तु देव कहे हैं।
वास्तु के स्वामी को अनुपम, शांतिकार रहे हैं।।
जिनवर की पूजा जो करता, उससे यह घबराए।
सहयोगी बन जाए उसका, बाधा न पहुँचाए।।50।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं गृहमंदिर वास्तु देव सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे वास्तुदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।
हे वास्तुदेव ! इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्) अर्घ्य के साथ घी और गुड़ चढ़ाएँ।

जाप्य- ॐ ह्रीं वास्तुदोष निवारणाय श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- वास्तु विधि विधान की, पूजा रची विशाल।
विशद शांति के हेतू अब, गाते हैं जयमाल।।

नवदेव जगत में पूज्य रहे, जिनकी महिमा सब गाते हैं।
पूजा करते हैं भावों से, चरणों में शीश झुकाते हैं।।
हम त्रैकालिक तीर्थंकर की, भावों से अर्चा करते हैं।
जो ग्रहारिष्ट जिन कहलाए, उनके पद मस्तक धरते हैं।।1।।
प्रवचन मात्राएँ आठ कहीं, उनकी महिमा को गाते हैं।
गणधर स्वामी ऋद्धीधारी, ऋषियों को हम सिर नाते हैं।।

सब वास्तु दोष निवारण को, शाश्वत् जिनवर को ध्याते हैं।
हम भक्तामर अरु सहस्रनाम, शुभ मोक्ष शास्त्र गुण गाते हैं।।2।।
शुभ द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव, अपना कुछ असर दिखाता है।
हो अशुभ द्रव्य या क्षेत्र काल, जो विपदाओं को लाता है।।
पृथ्वी पर देव दानवों का, पर्वत नदियों में वास रहा।
गृह क्षेत्र प्रतिष्ठानादिक में, कुत्सित देवों का वास रहा।।3।।
जिनवर की भक्ती करने से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
किञ्चित् भी विघ्न नहीं रहते, निर्दय सुर न रह पाते हैं।।
यदि तंत्र मंत्र कोई करते, वास्तु से बाधा जो आती।
तीर्थंकर की अर्चा करने से, बाधा सब दूर भाग जाती।।
जब भूत पिशाच करें बाधा, भू देव सामने आते हैं।
जिनवर का गुण चिन्तन करके, मन में भारी हर्षाते हैं।।
जो वास्तु विधान करें प्राणी, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
सुख शांती वैभव सम्पत्ति के, समकित गुण मानव पाते हैं।।5।।
घर में यदि विघ्न अशांती हो, व्यापार में हानी हो जाए।
वास्तु विधान करके प्राणी, मन वांछित फल पल में पाए।।
शुभ माह तिथि हो शुभ मुहूर्त्त, यह वास्तु विधान रचाते हैं।
बाधाएँ भय संकट सारे, कोई भी ना रह पाते हैं।।6।।

दोहा- मनवांछित फल प्राप्त हो, करके वास्तु विधान।
सुख-शांति आनन्द हो, बनते पुण्य निधान।।

ॐ ह्रीं वास्तु दोष निवारक अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- करके वास्तु विधान, विघ्न दूर हो पूर्णतः।
पावे पुण्य निधान करके, जिन अर्चा 'विशद'।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती विनायक यंत्र की

विनायक यंत्र की करते हैं, हम आरती मंगलकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, आज यहाँ शुभकार–हो भैया।।
हम सब उतारे मंगल आरती।

ॐकार बीजाक्षर संयुत, सर्व कला का धारी।
अ सि आ उ सा से संयुत है, पाप ताप परिहारी।। हो भैया..
अर्हंत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु अनगारी।
मंगल पार कहे लोकोत्तम, शरण भूत मनहारी।। हो भैया..
कथित केवली धर्म मनोहर, इस जग में बतलाये।
सत्रह मंत्र प्रमाणित जग में, भव से पार कराए।। हो भैया..
व्यंतर आदी भय की बाधा, ग्रह की बाधा नाशी।
वात–पित्त–कफ बाधा नाशे, है जो धर्म प्रकाशी।। हो भैया..
त्रिसंध्या में यंत्रराज की, आरति करना भाई।
सुत सम्पत्ति सौभाग्य दिलाए, 'विशद' श्रेष्ठ सुखदायी।। हो भैया..

नवदेवताओं की आरती

(तर्ज–इह विधि मंगल....)

नव कोटि से आरती कीजे, नव देवों की शरण गहीजे।
प्रथम आरती अर्हत्धारी, कर्म घातिया नाशनकारी। नवकोटि....
द्वितीय आरती सिद्ध अनंता, कर्मनाश होवें भगवंता। नवकोटि....
तृतीय आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की। नवकोटि....
चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की। नवकोटि....
पाँचवीं आरती मुनिसंघ की, बाह्याभ्यंतर रहित संग की। नवकोटि....
छठवीं आरती जैन धरम की, 'विशद' अहिंसा मई परम की। नवकोटि....
सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की। नवकोटि....
आठवीं आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों की मंगलकारी। नवकोटि....
नौवी आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की। नवकोटि....
आरती करके वन्दन कीजे, शीश झुकाकर आशीष लीजे। नवकोटि....

हवन विधि

हवन के लिये किसी काफी लम्बे–चौड़े स्थान में तीन कुण्ड बनावें। वे इस प्रकार हो– प्रथम तीर्थंकर कुण्ड एक अरत्नि (मुष्टि बंधे हाथ को अरत्नि कहते हैं।) लम्बा इतना ही चौड़ा चौकोर हो और इतना ही गहरा हो। इसकी तीन कटनी हो पहली 5 अंगुल की ऊँची, चौड़ी, दूसरी 4 अंगुल की, तीसरी 3 अंगुल की हो। इस कुण्ड के दक्षिण की ओर त्रिकोण कुण्ड उसी प्रमाण से लम्बा, चौड़ा, गहरा हो तथा उत्तर की ओर गोल कुण्ड उतनी ही लम्बाई, चौड़ाई और गहराई वाला हो; प्रत्येक कुण्ड का एक दूसरे से अन्तर चार–चार अंगुल का होना चाहिये। इन कुण्डों की चारों ओर कटनियों पर **ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं** लिखना चाहिये।

ये कुण्ड कच्ची ईंटों से एक दिन पहले तैयार कर लेने चाहिये और इन्हें अच्छे सुन्दर रंगों से रंग देना चाहिये। भीतर का भाग पीली या सफेद पोत देना चाहिये। कुण्डों की तीनों कटनियों पर चार–चार पतली खूंटी गाड़े या छोटे–छोटे गिलास रखें जिनमें कलेवा लपेटा जा सके। कलेवा लपेटते समय यह मंत्र बोलना चाहिये ।

मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं पञ्चवर्ण सूत्रेण त्रीन् वारान् वेष्टयामी।

प्रारम्भ में सब लोग अपने–अपने स्थान पर खड़े होकर मङ्गलाष्टक पढ़ते हुए कुण्ड पर पुष्प छोड़ें। तदनन्तर–

'ॐ ह्रीं क्ष्वीं भू: स्वाहा।'

यह मन्त्र पढ़कर कुण्ड की भूमि में पुष्प छोड़ें तथा दर्भ की कूची से भूमिका मार्जन करें।

'ॐ ह्रीं मेघकुमार धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं ह्रं सं तं पं स्वं झं यं क्ष: फट् स्वाहा।'

(यह मन्त्र पढ़कर हवन की भूमि–कुण्ड पर जल सींचे।)

'ॐ ह्रीं अग्निकुमाराय ह्यभ्ल्व्र्यूं ज्वल ज्वलतेज: पतये अमित तेजसे स्वाहा।'

(यह पढ़कर कपूर जलाकर भूमि को संतप्त करें।)

'ॐ ह्रीं अर्हं क्षं वं वं श्री पीठस्थापनं करोमीति स्वाहा।'

(यह पढ़कर होम कुण्ड के पश्चिम में पीठ स्थापन करें।)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जगतां सर्वशान्ति कुर्वन्तु श्रीपीठयन्त्रस्थापनं करोमिति स्वाहा।

(यह पढ़कर पीठ पर विनायक यन्त्र विराजमान करें।) तदनन्तर नीचे लिखे मन्त्रों से यन्त्र की पूजा करें, अर्घ चढ़ावें।

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमात्मभ्यः स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं नमः नमोऽनादिनिधनेभ्यः स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं नमः नमोनृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं नमः नमोऽनन्तदर्शनेभ्यः स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं नमः नमोऽनन्तवीर्येभ्यः स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं नमः नमोऽनन्तसुखेभ्यः स्वाहा।

तदनन्तर–

ॐ ह्रीं धर्मचक्रायाप्रतिहततेजसे स्वाहा।

यह पढ़कर धर्मचक्र के लिये अर्घ चढ़ावे।

ॐ ह्रीं श्वेतछत्रत्रयश्रियै स्वाहा।

(यह पढ़कर छत्रत्रय को अर्घ देवें।)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं हं सौं ह्रौं सर्वशास्त्रप्रकाशिनि वद वद वाग्वादिनि अवतर अवतर, तिष्ठ तिष्ठ, सन्निहितौ भव भव वषट्।

(यह मन्त्र पढ़कर सरस्वती का आह्वान करें।)

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशाङ्गश्रुतज्ञानायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर सरस्वती जिनवाणी को अर्घ देवें।)

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्र, चतुरशीतिलक्षोत्तर गुणाष्टदश–सहस्रशीलधरगणधरचरण ! आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ सन्निहितो भव भव वषट्।

(यह पढ़कर निर्ग्रन्थ गुरु का आह्वान करें।)

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर गुरु को अर्घ चढ़ावें।)

ॐ ह्रीं स्वस्तिविधानाय पुण्याहवाचनार्थं च कलशं स्थापयामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर चाँवलों पर जल भरा एवं श्रीफल तथा तूल आदि से सुशोभित कलश स्थापित करें।)

ॐ ह्रीं ह्रों ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिंच्छकेसरि–पुण्डरीकमहापुण्डरीकगङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीता–सीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्धजलसुवर्णघट–प्रभालितनवरत्नगन्धाक्षत् पुष्पोर्जितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(यह पढ़कर कलश पर थोड़ा प्रासुक जल डालें।)

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर घृत से प्रज्वलित कर चारों दिशाओं में चार दीपक रखें।) तदनन्तर–

(नीचे लिखे मन्त्र बोलकर क्रम से जल आदि आठ द्रव्य चढ़ावें।)

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः। (जलम्)
ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः। (चन्दनम्)
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः (अक्षतम्)
ॐ ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पम्)
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः (नैवेद्यम्)
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योतनाय नमः (दीपम्)
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपम्)
ॐ ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः (फलम्)
ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः (अर्घम्)

तदनन्तर–

(यह पढ़कर कुण्ड में समिधाएँ स्थापित करें।)

ॐ ह्रीं होमार्थं अग्नित्रयाधारभूतां समिधां स्थापयामि।

(हवनकुण्ड की कटनी पर कपूर जलायें)

ओं ओं ओं ओं रं रं रं रं अग्निं स्थापयामि।

(यह पढ़कर कपूर जलाकर कुण्ड में अग्नि स्थापन करें।)

जिनेन्द्रवाक्यैरिव सुप्रसन्नैः, संशुष्कदर्भाग्रधृताग्निकीलैः।
कुण्डस्थिते सेन्धनशुद्धवह्नौ, संधुक्षणं संप्रति संतनोमि।।

ॐ ह्रीं श्रीं रं रं रं रं दर्भपूलेन ज्वलय ज्वलय नम: फट् स्वाहा।

(यह पढ़कर डाभ के फूल से अग्नि का संधुक्षण करें।)

श्रीतीर्थनाथपरिनिर्वृतिपूतकाले, ह्यागत्य वह्निसुरपामुकुटोल्लसद्भि:।
वह्निव्रजैर्जिनपदेहमुदारभक्त्या, देहुस्तदग्निमहमर्चयितुं दधामि ।।1 ।।

ॐ ह्रीं चतुरस्रे तीर्थंकरकुण्डे गार्हपत्याग्नौ कृतसंस्काराय तीर्थंकरपरमदेवायार्घं स्वाहा।

(यह पढ़कर कुण्ड में अर्घ चढ़ावें।)

गणाधिपानां शिवयातिकालेऽग्नीन्द्रौत्तमाङ्गस्फुरदुग्ररोचि:।
संस्थाप्य पूज्यश्च समाह्वनीयो, विघ्नौघशान्त्यै विधिना हुताश: ।।2 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं वृत्ते द्वितीयगणधरकुण्डे आह्वानीयाग्नौ कृतसंस्काराय गणधर–देवायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर कुण्ड में अर्घ चढ़ावें।)

श्रीदक्षिणाग्नि: परिकल्पितश्च, किरीटदेशात्प्रणताग्निदेवै:।
निर्वाणकल्याणकपूतकाले, तमर्चये विघ्नविनाशनाय ।।3 ।।

ॐ ह्रीं श्रीं त्रिकोणे तृतीयसामान्यकेवलिकुण्डे दक्षिणाग्नौ कृतसंस्काराय सामान्यकेवलिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर कुण्ड में अर्घ चढ़ावें।)

तदनन्तर–

शुद्ध घी से निम्नलिखित आहुतियाँ देवें।

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्य स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं सूरिभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं पाठकेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं साधुभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनधर्मेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनागमेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनबिम्बेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्य स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नम:। ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नम:। ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्राय स्वाहा।

(साकल्य से आहुतियाँ देवें। मन्त्र के बाद स्वाहा शब्द का उच्चारण स्पष्ट करें।)

पीठिकामन्त्रा:

ॐ सत्यजाताय नम: स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नम: स्वाहा। ॐ परम जाताय नम: स्वाहा। ॐ अनुपमजाताय नम: स्वाहा। ॐ स्वप्रधानाय नम: स्वाहा। ॐ

अचलाय नम: स्वाहा। ॐ अक्षयाय नम: स्वाहा। ॐ अव्याबाधाय नम: स्वाहा। ॐ अनन्तज्ञानाय नम: स्वाहा। ॐ अनन्तदर्शनाय नम: स्वाहा। ॐ अनन्तवीर्याय नम: स्वाहा। ॐ अनन्तसुखाय नम: स्वाहा। ॐ नीरजसे नम: स्वाहा। ॐ निर्मलाय नम: स्वाहा। ॐ अच्छेद्याय नम: स्वाहा। ॐ अभेद्याय नम: स्वाहा। ॐ अजराय नम: स्वाहा। ॐ अमराय नम: स्वाहा। ॐ अप्रमेयाय नम: स्वाहा। ॐ अगर्भवासाय नम: स्वाहा। ॐ अक्षोभाय नम: स्वाहा। ॐ अविलीनाय नम: स्वाहा। ॐ परमधनाय नम: स्वाहा। ॐ परमकाष्ठा योगरूपाय नम: स्वाहा। ॐ लोकाग्रनिवासिने नमो नम: स्वाहा। ॐ परमसिद्धेभ्यो नम: स्वाहा। ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नम: स्वाहा। ॐ ह्रीं केवलिसिद्धेभ्यो नम: स्वाहा। ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नम: स्वाहा। ॐ ह्रीं केवलिसिद्धेभ्यो नमो नम: स्वाहा। ॐ अन्त:कृतसिद्धेभ्यो नमो नम: स्वाहा। ॐ परम्परासिद्धेभ्यो नमो नम: स्वाहा। ॐ अनादिपरम्परासिद्धेभ्यो नमो नम: स्वाहा। ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नम: स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे आसन्नभव्यनिर्वाणपूजार्हअग्नोन्द्राय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

(यह काम्यमन्त्र पढ़कर प्रतिष्ठाचार्य हवन करने वालों पर पुष्प फेंके। अथवा जल के छींटे देवे।)

जातिमन्त्रा:

ॐ सत्यजन्मन शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अर्हज्जन्मन: शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अर्हन्मातु: शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अनादिगमनस्य शरण प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अनुपमजन्मन: शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे! ज्ञानमूर्ते ! ज्ञानमूर्ते ! ज्ञानमूर्ते ! सरस्वति ! सरस्वति ! स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

निस्तारकमन्त्रा:

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा। ॐ षट्कर्मणे स्वाहा। ॐ ग्रामपतये स्वाहा। ॐ अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा। ॐ स्नातकाय स्वाहा। ॐ श्रावकाय स्वाहा। ॐ देवब्राह्मणाय स्वाहा। ॐ सुब्राह्मणाय स्वाहा। ॐ अनुपमाय स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! निधिपते ! निधिपते ! वैश्रवण! वैश्रवण ! स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

ऋषिमन्त्रा:

ॐ सत्यजाताय नम: स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नम: स्वाहा। ॐ निर्ग्रन्थाय नम: स्वाहा। ॐ वीतरागाय नम: स्वाहा। ॐ महाव्रताय नम: स्वाहा। ॐ त्रिगुप्ताय नम: स्वाहा। ॐ महायोगाय नम: स्वाहा। ॐ विविधयोगाय नम: स्वाहा। ॐ विवर्द्धये नम: स्वाहा। ॐ अङ्गधराय नम: स्वाहा। ॐ पूर्वधराय नम: स्वाहा। ॐ गणधराय नम: स्वाहा। ॐ परमर्षिभ्यो नमो नम: स्वाहा। ॐ अनुपमजाताय नम: स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! भूपते ! भूपते ! नगरपते ! नगरपते ! कालश्रमण ! कालश्रमण ! स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

सुरेन्द्रमन्त्रा:

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा। ॐ दिव्यजाताय स्वाहा। ॐ दिव्यार्चिजाताय स्वाहा। ॐ नेमिनाथाय स्वाहा। ॐ सौधर्माय स्वाहा। ॐ कल्पाधिपतये स्वाहा। ॐ अनुचराय स्वाहा। ॐ परमपरेन्द्राय स्वाहा। ॐ अहमिन्द्राय स्वाहा। ॐ परमार्हताय स्वाहा। ॐ अनुपमाय स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! कल्पपते ! कल्पपते ! दिव्यमूर्ते ! दिव्यमूर्ते ! वज्रनामन् ! वज्रनामन् ! स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु।

परमराजादिमन्त्रा:

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा। ॐ अनुपमेन्द्राय स्वाहा। ॐ विजयार्च्यजाताय स्वाहा। ॐ नेमिनाथाय स्वाहा। ॐ परमजाताय स्वाहा। ॐ परमार्हताय स्वाहा। ॐ अनुपमाय स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे! उग्रतेज: ! उग्रतेज: ! दिशाञ्जन ! दिशाञ्जन ! नेमिविजय ! नेमिविजय ! स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

परमेष्ठिमन्त्रा:

ॐ सत्यजाताय नम: स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नम: स्वाहा। ॐ परमजाताय नम: स्वाहा। ॐ परमार्हताय नम: स्वाहा। ॐ परमरूपाय नम: स्वाहा। ॐ परमतेजसे नम: स्वाहा। ॐ परमगुणाय नम: स्वाहा। ॐ परमस्थानाय नम: स्वाहा। ॐ परमयोगिने नम: स्वाहा। ॐ परमभाग्याय नम: स्वाहा। ॐ परमर्द्धये नम: स्वाहा। ॐ परमप्रसादाय नम: स्वाहा। ॐ परमविज्ञानाय नम: स्वाहा। ॐ परमदर्शनाय नम: स्वाहा। ॐ परमवीर्याय नम: स्वाहा। ॐ परमसुखाय नम: स्वाहा। ॐ परमसर्वज्ञाय नम: स्वाहा। ॐ अर्हते नम: स्वाहा। ॐ परमेष्ठिने नम: स्वाहा। ॐ परमनेत्रे नमो नम: स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! त्रैलोक्यविजय ! त्रैलोक्यविजय ! धर्ममूर्ते! धर्ममूर्ते ! धर्मनेमे ! धर्मनेमे ! स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

●●●

पूर्णाहुति

ॐ ह्रीं अर्ह सिद्ध केवलिभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रों पंचदशतिथिदेवेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रौं नवग्रहदेवेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रौं द्वात्रिंशदिन्द्रेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रौं दशलोकपालकेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं अग्नीन्द्राय स्वाहा।

ॐ अर्हते नम: स्वाहा:। ॐ परमेष्ठिने नम: स्वाहा। ॐ परमनेत्रै नमो नम: स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! त्रैलोक्यविजय ! त्रैलोक्यविजय ! धर्ममूर्ते! धर्ममूर्ते ! धर्मनेमे ! धर्मनेमे ! स्वाहा।

सेवा फलं षट परम स्थानं भवतु, अपमृत्यु विनाशनं भवतु समाधि मरणं भवतु स्वाहा। (पुष्प क्षेपण करें।)

तदनन्तर–जिस मंत्र का जितना जाप किया हो उसकी दशांश आहुतियाँ देनी चाहिए। मंत्र मन में बोलकर केवल स्वाहा शब्द का उच्चारण करें। (हवन समाप्त होने पर जो घट स्थापित किया था उसे हाथ में लेकर इन्द्र वृहत शान्तिधारा देवें।)

तत्पश्चात्

पुण्याहवाचन

ॐ पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाण–सागरप्रभृतयश्चतुर्विंशतिपरमदेवा: व: प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ सम्प्रतिकालसंभवा वृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशतिपरमजिनेन्द्रा व: प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ त्रिकालवर्ति परमधर्माभ्युदय सोमन्धरप्रभृतय: विदेहक्षेत्र विरहमाण विंशति परमदेवा: व: प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवा व: प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ सप्तर्द्धिविशोभिता: कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरसाधुचरणा व: प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। (धारा)

इह वान्यनगरग्रामदेवतामनुजा: सर्वे गुरुभक्ता जिनधर्मपरायणा भवन्तु। दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु। सर्वजिनधर्मभक्तानां धन–धान्यैश्वर्यबलद्युतियश: प्रमोदोत्सवा: प्रवर्तन्ताम्।

तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, कर्मसिद्धिरस्तु, इष्टसम्पत्तिरस्तु, काम–माङ्गल्योत्सवा: सन्तु, पापानि शाम्यन्तु, घोराणि शाम्यन्तु, पुण्यं वर्धताम्, धर्मो वर्धताम्, श्रीर्वर्धताम् कुलं गोत्रं चाभिवर्धेताम्, स्वस्ति भद्रं चास्तु, ह्रीं क्ष्वीं हं स: स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्रचरणार–विन्देष्वानन्दभक्ति: सदास्तु

तदनन्तर शान्तिपाठ और विसर्जन पाठ पढ़कर कलशा ले मचान पर चढ़े।

●●●

समुच्चय महा–अर्घ्य

पूज रहे अरहंत देव को, और पूजते सिद्ध महान्।
आचार्योपाध्याय पूज्य लोक में, पूज्य रहे साधू गुणवान।।
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, चैत्य पूजते मंगलकार।
सहस्रनाम कल्याणक आगम, दश विध धर्म रहा शुभकार।।
सोलहकारण भव्य भावना, अतिशय तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
बीस विदेह के तीर्थंकर जिन, 'विशद' पूज्य चौबिस भगवान।।
ऊर्जयन्त चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर कैलाश।
पञ्चमेरु नन्दीश्वर पूजें, रत्नत्रय में करने वास।।
मोक्षशास्त्र को पूज रहे हम, बीस विदेहों के जिनराज।
महा अर्घ्य यह नाथ ! आपके, चरण चढ़ाने लाए आज।।
दोहा– जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
सर्व पूज्य पद पूजते, चरण झुकाकर माथ।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नम: प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नम:। दर्शन–विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नम:। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नम:। सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान–सम्यक्चारित्रेभयो नम:। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर–नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नम:। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नम:। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नम:। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नम:। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नम:। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नम:। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नम:, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नम:।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे .... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे....

मासानामुत्तमे .... मासे शुभ पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुनि आर्यिकानां श्रावक–श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य

अकृत्रिम जिन चैत्यालय शुभ, तीन लोक में रहे महान्।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, स्वर्ग में जो भी रहे विमान।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरु शुभ, दीप धूप फल हो शुभकार।
'विशद' कर्म की शांति हेतु हम, अर्घ्य चढ़ाते यह मनहार।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम–चैत्यालय सम्बंधिजिन बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(शम्भू छंद)

चन्द्र समान सुमुख है जिनका, शील सुगुण संयम धारी।
लज्जित करते नयन कमल दल, सहस्राष्ट लक्षण धारी।।
द्वादश मदन चक्री हो पंचम, सोलहवें तीर्थंकर आप।
इन्द्र नरेन्द्रादि से पूजित, जग का हरो सकल संताप।।
सुरतरु छत्र चँवर भामण्डल, पुष्प वृष्टि हो मंगलकार।
दिव्य ध्वनि सिंहासन दुन्दुभि, प्रातिहार्य ये अष्ट प्रकार।।
शांतिदायक हे शांति जिन !, श्री अरहंत सिद्ध भगवान।
संघ चतुर्विध पढ़ें सुनें जो, सबको कर दो शांति प्रदान।।
इन्द्रादि कुण्डल किरीटधर, चरण कमल में पूजें आन।
श्रेष्ठ वंश के धारी हे जिन !, हमको शांति करो प्रदान।।
संपूजक प्रतिपालक यतिवर, राजा प्रजा राष्ट्र शुभ देश।
'विशद' शांति दो सबको हे जिन !, यही हमारा है उद्देश।।
होय सुखी नरनाथ धर्मधर, व्याधी न हो रहे सुकाल।
जिन वृष धारे देश सौख्यकर, चौर्य मरी न हो दुष्काल।।

(चाल छन्द)

जिनघाति कर्म नशाए, कैवल्य ज्ञान प्रगटाए।
हे वृषभादिक जिन स्वामी, तुम शांती दो जगनामी।।
हो शास्त्र पठन शुभकारी, सत्संगति हो मनहारी।
सब दोष ढाँकते जाएँ, गुण सदाचार के गाएँ।।
हम वचन सुहित के बोलें, निज आत्म सरस रस घोलें।
जब तक हम मोक्ष न जाएँ, तब तक चरणों में आएँ।।
तब पद मम हिय वश जावें, मम हिय तव चरण समावें।
हम लीन चरण हो जाएँ, जब तक मुक्ती न पाएँ।।

दोहा– **वर्ण अर्थ पद मात्रा में, हुई हो कोई भूल।**
क्षमा करो हे नाथ सब, भव दुख हों निर्मूल।।
चरण शरण पाएँ 'विशद', हे जग बन्धु जिनेश।
मरण समाधी कर्म क्षय, पाएँ बोधि विशेष।।

विसर्जन पाठ

जाने या अन्जान में, लगा हो कोई दोष।
हे जिन ! चरण प्रसाद से, होय पूर्ण निर्दोष।।
आह्वानन पूजन विधि, और विसर्जन देव।
नहीं जानते अज्ञ हम, कीजे क्षमा सदैव।।
क्रिया मंत्र द्रवहीन हम, आये लेकर आस।
क्षमादान देकर हमें, रखना अपने पास।।
सुर–नर–विद्याधर कोई, पूजा किए विशेष।
कृपावन्त होके सभी, जाएँ अपने देश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आशिका लेने का पद

दोहा– **लेकर जिन की आशिका, अपने माथ लगाय।**
दुख दरिद्र का नाश हो, पाप कर्म कट जाय।।

(कायोत्सर्ग करें)